।। ओ३म्।।

कण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

अमृत वचन

जो व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगता,
वो व्यवहार दूसरों के साथ भी मत करो।।

वर्ष ३१, अंक १३ एक प्रति : २ रुपये
सोमवार २५ फरवरी, २००८ से २ मार्च, २००८ तक
विक्रमी सम्वत् २०६४ दयानन्दाब्द : १८४
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ वार्षिक : १०० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com

दिल्ली की आर्यसमाजों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

आर्य-परिवार होली मंगल मिलन समारोह

शुक्रवार २१ मार्च, ०८ सायं ३.३० से ७.१५ बजे

स्थान : रघुमल आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजाबाजार (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

❖ नवसस्येष्टि यज्ञ : ३.३० बजे ❖ बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम ❖ भजन एवं हास्य रंग ❖ होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : ७.१५ बजे

इस अवसर पर आपसे निवेदन है कि :- १.यह आर्यों के परिवारों के मिलन का पर्व है। अतएव आप अपने परिवार के छोटे से छोटे एवं बुजुर्गों सहित इस समारोह में सम्मिलित हाने का प्रयास करें। २. क्या आप किन्हीं ऐसे परिवारों के विषय में जानते हैं जिनकी पूर्व पीढ़ियों में आर्य समाज रचा बसा हो और अब वे किन्हीं कारणों से आर्य समाज के संगठन से सक्रिय सम्बन्ध न रख पाए हों ? कपया इस कार्यक्रम का उन्हें निमन्त्रण दें अथवा उनका नाम—पते के सम्बन्ध में सभा को सूचित करें जिससे सभा उनको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर सकें। आप अपने नाम एवं पते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ई-मेल aryasabha@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

आर्यजन दिन एवं समय नोट कर लें तथा सपरिवार इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं।

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१; दूरभाष : ०११-२३३६०१५० Email : aryasabha@yahoo.com

समस्त देशवासियों को स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिम बंगाल का चुनाव सम्पन्न
श्री आनन्दकुमार आर्य प्रधान एवं श्री दीनदयाल गुप्त महामन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिम बंगाल का त्रैवार्षिक निर्वाचन रविवार दिनांक २४ फरवरी, २००८ को आर्यसमाज आसनसोल के अन्तर्गत आर्य कन्या उच्च विद्यालय में प्रातः काल ११ बजे सम्पन्न हुआ। ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना के पश्चात् गत वर्षों का विवरण एवं आय–व्यय विवरण पारित किया गया।

सैंकड़ो प्रतिनिधियों की उपस्थिति में चुनाव की कार्यवाही चुनाव अधिकारी **श्री रमेन्द्र कुमार गुप्त** जोकि बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री भी हैं, की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान **कै० देवरत्न आर्य** की ओर से चुनाव में पर्यवेक्षक के रूप में सभा के उपमन्त्री **श्री भारतभूषण त्रिपाठी** उपस्थित थे। चुनाव में उपस्थित प्रतिनिधियों का उत्साह देखते ही बनता था। चुनाव की कार्यवाही आरम्भ होते ही अनेक महानुभावों ने पुनः श्री आनन्द कुमार आर्य जी का प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत किया। अनेक आर्य महानुभावों ने उनके नाम का समर्थन किया। अन्य कोई नाम प्रस्तुत न होने पर चनुाव अधिकारी श्री रमेन्द्र कुमार गुप्त जी ने **श्री आनन्द कुमार आर्य जी** की सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिए निर्वाचित होने की घोषणा की।

तत्पश्चात् कोलकाता के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं आर्यसमाज के कर्मठ अधिकारी रहे **श्री दीन दयाल गुप्त जी** महामन्त्री पद के लिए निर्वाचित घोषित किए गए। समस्त कार्यकारिणी बनाने का अधिकार निर्वाचित प्रधान जी को सर्वसम्मति से दिया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य जी तथा मन्त्री **श्री प्रकाश आर्य जी** ने नव निर्वाचित अधिकारियों को शुभकामनाएं प्रकट की हैं तथा आशा व्यक्त की है कि उनके नेतत्व में बंगाल क आर्यसमाज निरन्तर उन्नति करेगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नवनिर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्री के अवसर पर

विशाल ऋषि-मेला

६ मार्च, २००८ रामलीला मैदान, नई दिल्ली

यज्ञ : प्रातः ८:०० बजे

-: मुख्य आकर्षण :-

* खेल-प्रतियोगिताएं * भाषण-प्रतियोगिता * मध्याह्न गोष्ठी
* मधुर भजन एवं संगीत * सार्वजनिक सभा तथा * शास्त्रार्थ

भाषण विषय : “राष्ट्र जागरण में महर्षि दयानन्द का योगदान”

समय : प्रातः ११.०० बजे अध्यक्षता : महाशय रामविलास खुराना

सभी आर्यजन समय पर पहुंचकर आयोजन को सफल बनाकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक :- आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अन्तरंग सभा की एक अत्यावश्यक बैठक **सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी की अध्यक्षता में रविवार दिनांक ६ मार्च, २००८ को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ के सभागार में प्रातः ११ बजे आयोजित की गई है।** सभी सदस्यों को विधिवत् सूचना भेज दी गई है। सभी सदस्यों से निवेदन है कि निश्चित तिथि को समय पर पधारकर सहयोग प्रदान करें।

— प्रकाश आर्य, सभामन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

अन्तिम भाग

214

महर्षि दयानन्द के बाद

– स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

उस समय छोटा बड़ा, जिसे भी देखो, दयानन्द के जीवनाँश से सजीव हो रहा था। उसके भालपर वैसी ही निर्भयता थी, वचनों में वैसा ही ओज था। उसकी आंखों में दयानन्दी तेज चमकता था। उसके मन में दयानन्दी उमंग के ऊंचे तरंग उठते थे। उसके हृदय में दयानन्दी उच्च अभिलाषा का विकास झलकता और उसके कर्मों में उस कर्म योगी की क्रिया का कौशल प्रकाशित होता था।

उन दिनों जहां जाओ वहां आर्य बन्धुओं में देश–हित के गीत गाये जाते, एकता की देवी के पाठ सुनाई देते, सामाजिक संशोधन के सूत्र संगठित होते और परमात्मदेव का यश–वर्णन किया जाता था। उस समय आर्यों के मनों में, आर्यों के घरों में, आर्यों की मण्डलियों में, आर्यों के मन्दिरों में आर्यों के महोत्सवों में जहां देखो, सर्वत्र वेद-प्रचार था, ईश्वर-विचार था, शिक्षा-विस्तार था, सामाजिक सुधार था, और आनन्द कन्द भगवान् दयानन्द के पावन प्रकाश का जय जयकार था। ।। समाप्तम् ।।

पाठकों की सेवा में :- *स्वामी सत्यानन्दकत श्रीमद्दयानन्द प्रकाश में से हम साप्ताहिक आर्यसन्देश में महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवन वतान्त प्रकाशित करते रहे हैं। यह इस ग्रन्थ की अन्तिम कड़ी है। आशा है पाठको को रूचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक लगा होगा। पाठकों से निवेदन है कि हमें अपनी प्रतिक्रियाएं लिखकर भेजें।*

अगले अंक से हम प्रो० रत्नसिंह जी द्वारा की गई आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या प्रकाशित करेंगे। आशा है पाठकगण इसे भी पसन्द करेंगे और अपनी प्रतिक्रिया भेजकर हमें अवगत कराएंगे। *– सम्पादक*

दिल्ली सभा के "वैदिक प्रकाशन" की शानदार प्रस्तुति

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

(स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित

गौकरुणानिधि, पंच महायज्ञविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला एवं आर्याभिविनय का अद्भुत संग्रह

केवल मात्र २५/- रुपये

डाक से मंगाने पर डाक व्यय अतिरिक्ति देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

आर्यवीरांगनाओं हेतु सूचना

समस्त आर्य वीरांगनाओं से निवेदन है कि भारत में कहीं भी आयोजित हो रहे या होने वाले आर्यवीरांगना दल के कार्यक्रमों की सूचना **सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल** की प्रधान संचालिका **स्वामी उत्तमा यति** (पूर्वनाम डॉ० उज्ज्वला वर्मा) जी मोबाइल नं० : 09828703993 पर तथा मेरे मोबाईल पर भी अवश्य देवें, ताकि आगामी राष्ट्रीय आर्य वीरांगना दल शिविर की तिथियां तय करने में सुविधा हो सके।

– मृदुला चौहान

मो. 9810702760

"सत्य की राह" वीसीडी

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार तथा युवाओं को आर्यसमाज में आने के लिए प्रेरित करने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म महर्षि जन्मोत्सव से बोधोत्सव तक

~~50~~/– 25/– रु.

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें।

नोट : डाक द्वारा मंगाने पर डाक-व्यय पथक् से देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दोनों आयोजन स्थलों पर लगे सभा के स्टालों पर ही यह सीडी इस मूल्य पर मिलेगी। सभा कार्यालय में नहीं।

श्रद्धांजलि

जन्मोत्सव (23 फरवरी) पर विशेष

वैदिक धर्म समानता का संदेश देता है

– धर्मपाल आर्य

जलियांवाला बाग काण्ड के बाद स्वामी श्रद्धानन्द के बहुत प्रयासों से अमतसर में कांग्रेस का महाधिवेशन आयोजित हुआ। पं० मोतीलाल नेहरू और महामना मदन मोहन मालवीय उस समय कांग्रेस के अग्रणी कार्यकर्ता थे। स्वामी श्रद्धानन्द उस समारोह के स्वागताध्यक्ष बनाए गए। उस समय उन्होंने देशवासियों को चारा परामर्श दिए। १.अपने आचरण को उत्तम बनाकर दीपक बनो, ताकि उससे दूसरे दीप जलाए जा सकें। २. समाज को सामाजिक दष्टि से संगठित करो और खिलाफत की अपेक्षा स्वराज की प्राप्ति पर अधिक ध्यान दो। ३. यदि अपने समाज और जाति को स्वतंत्र देखना चाहते तो तो पहले स्वयं सदाचार की मूर्ति बनो, फिर अपनी सन्तान में सदाचार की बुनियाद रखो। जब पिता सदाचारी होगा, तभी बेटे समाज के काम आने वाले होंगे। और जब शिक्षक सदाचारी होंगे तभी कौम की जरूरत पूरी करने वाले नौजवान निकलेंगे। अन्यथा हमारी सन्तानें विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलमा बनकर रहेंगी। ४. ईसाई मुक्ति फौज भारत के साढ़े छह करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्नशील है, क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश सरकार के जहाज के लिए लंगर के समान हैं। आज से ये साढ़े छह करोड़ लोग हमारे लिए अछूत नहीं रहे, बल्कि हमारे भाई–बहन हैं, हमारे पुत्र–पुत्रियां है। उनके गुहस्थ नर-नारियों को अपने सामाजिक व्यवहार में सम्मिलित करो।

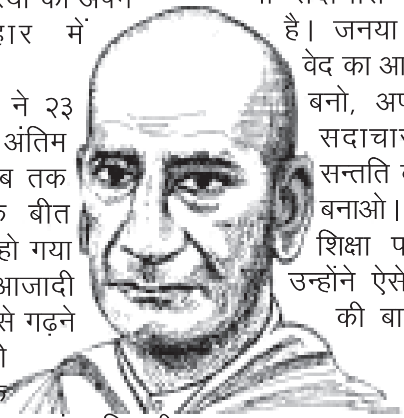

स्वामी श्रद्धानन्द ने २३ दिसम्बर, १९२६ को अंतिम सांस ली। तब से अब तक लगभग आठ दशक बीत चुके। भारत आजाद हो गया हममें से अनेक इस आजादी को अपने–अपने ढंग से गढ़ने और सार्थक बनाने की बातें करते हैं। अनेक लोग भारत की वैदिक सस्कति की दुहाई देते हैं। कई लोग स्वामी श्रद्धानन्द का अनुयायी होने का दावा करते हैं। लेकिन हम में से कितने हैं जो अपनी संतान के सामने सदाचारी पिता का आदर्श पेश करते हैं? कितने हैं जो समाज के कमजोर लोगों को अपने बराबर बिठाते हैं? जबकि वैदिक धर्म हमें समानता का ही संदेश देता है।

स्वामी श्रद्धानन्द का कहना था कि सार्वजनिक व्यक्ति का कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं होता। उसका तो एक–एक क्षण सबके सामने होता है। उसका कोई भी कार्य अपने लिए नहीं होता, सभी कार्य दूसरों के लिए होते हैं। इसलिए किसी भी संस्था के सर्वोच्च अधिकारी को प्रकाश स्तम्भ की तरह बनना चाहिए।

स्वामी जी ने अपनी सन्तान को भी सदाचारी बनाने की बात कही है। जनया दैव्यम् जनम्– यह वेद का आदेश है। स्वयं सदाचारी बनो, अपनी सन्तति को भी सदाचारी बनाओ। अपनी सन्तति को अपने से भी अच्छा बनाओ। गुरूकुल (कांगड़ा में) शिक्षा पद्धति के माध्यम से उन्होंने ऐसे ही वीरों के निर्माण की बात सोची थी।

आज के भाषणकर्ताओं का प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि उनकी कथनी और करनी में अन्तर होता है। असली प्रभाव से उसी का पड़ता है, जो जैसा कहता है वैसा स्वयं भी करता है। सत्य का उपदेश करने वाले को सत्यवादी होना चाहिए। कर्म का उपदेश करने वाले को कर्मशील होना चाहिए। संयम का उपदेश करने वाले को संयमी होना चाहिए। आज के विषाक्त वातावरण में सदाचारी लोगों की आवश्यकता है।

स्वामी जी ने समझाया कि वैदिक धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है। लेकिन उसका मूल मंत्र है कि सभी को समानता का अधिकार दिया जाए। जब सभी को समान सम्मान मिलेगा, ऊँच–नीच का भेद समाप्त हो जायेगा, सभी को समान अवसर मिलेंगे तो स्वतः ही धर्मान्तरण का चलन समाप्त हो जायेगा। अमतसर के अधिवेशन में दिए गए स्वामी श्रद्धानन्द के वे चार परामर्श आज भी हमारे समाज के लिए उतने ही आवश्यक और प्रासंगिक है जितने उस समय थे।

– प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

हार्दिक शुभकामनाएं

सभा उप प्रधान श्री सोमदत्त जी महाजन का १३ फरवरी को ८१वां जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर लिया गया एक चित्र उनके साथ हैं उनकी सहधर्मिणी श्रीमती राज महाजन। सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

महर्षि बोधोत्सव से प्रेरणा लें

– महात्मा चैतन्यमुनि

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को शिवरात्रि को इस तथ्य का बोध प्राप्त हुआ कि यह शिवलिंग सच्चा शिव नहीं हो सकता है तथा उसके बाद उन्हें बहिन और चाचा की मत्यु से इस बात का भी बोध हुआ कि जिस भी शरीर का जन्म हुआ है उसका अन्त भी एक न एक दिन अवश्य होना है। उन्होंने अपने आगामी जीवन में कठोर परिश्रम के द्वारा इस बोध को प्रतिबोध की यात्रा तक पहुंचाने का सार्थक कार्य किया। बोधोत्सव मनाने की सार्थकता इसी में है कि हम भी बोध से प्रतिबोध तक की यात्रा को पूर्णता प्रदान करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थप्रकाश के नवम समुल्लास में प्रश्न उठाते है– मुक्ति किसको कहते हैं? उत्तर– ***मुचंन्ति पथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्तिः।*** जिसमें छूट जाना हो उसका नाम मुक्ति है। प्रश्न–किससे छूट जाना? उत्तर जिससे छूटना चाहते हैं? उत्तर–दुःख से। प्रश्न छूटकर किसकोप्राप्त होते और कहां रहते हैं? उत्तर–सुख कोप्राप्त होते और ब्रह्म में रहते हैं। प्रश्न–मुक्ति और बन्धन किन–किन बातों से होता है? उत्तर–परमेश्वर की आज्ञा पालन, और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने, पढ़ाने और धर्म से पुरूषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपात रहित न्यायधर्मानुसार ही करे। इत्यादि साधनों से मुक्ति ओर इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बन्ध होता है। इन पंक्तियों में जहां उन्होंने बन्धन के कारणों का विवेचन किया है वहीं दूसरी ओर मुक्ति के साधन भी विस्तार से बता दिए हैं। जब तक हम उपरोक्त आदेशानुसार अपने जीवन को नहीं बनाएंगे तब तक हम अपने स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते हैं। अपने में स्थित हुए बिना मुक्ति और परमात्मा सिद्धि की बात कल्पना मात्र ही रह जायेगी। इसी समुल्लास में वे लिखते है–प्रश्न–मुक्ति किसको प्राप्त नहीं होती? उत्तर– जो बद्ध है। प्रश्न–बद्ध कौन है? उत्तर–जो अधर्म अज्ञान में फंसा हुआ जीव है। प्रश्न–बन्ध और मोक्ष स्वभाव से होता है वा निमित्त से? उत्तर–निमित्त से क्योंकि जो स्वभाव से होता तो बन्ध और मुक्ति की निवत्ति कभी नहीं होती। इस इस क्रम में बन्धन से छूटने और मुक्ति प्राप्त करने का चिन्तन गहराई से करना चाहिए। बोध से हमें प्रतिबोध की ओर अग्रसर होना है। बोध तो केवल वाक्यजन्य ज्ञान है मगर प्रतिबोध है निदिध्यासन द्वारा उस ब्रह्म की अनुभूति करके मुक्ति को प्राप्त करना। वेद में कहा गया है–

ऋषो बोधप्रतीबोधवस्वप्नो यश्च जागविः। तो ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागताम्।।

(अथर्व ०५–३०–१०)

बोध और प्रतिबोध दो देखने वाले हैं जो एक –एक न सोने वाला और जागने वाला है। हमारे प्राण के ये दोनों रखवाले दिन–रात जागते रहें। व्यक्ति को बन्धन के कारणों का बोध तो हो गया मगर यदि उसने उन्हें दूर करने के लिए प्रयास नहीं किया तो वह बन्धन से नहीं छूट सकेगा। इसीलिए महर्षि जी नौंवे समुल्लास के प्रारम्भ में ही लिखते हैं–

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्या मत्युं तीर्त्वा विद्ययामतमश्नुते।।

(यजु० ४०–१४)

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान मोक्ष को प्राप्त होता है। योगदर्शन (२–३) में पंच क्लेशों के बारे में कहा गया है– ***अविद्यास्मिता राग द्वेषाभि निवेशः पंच क्लेशः।*** महर्षि इस सम्बन्ध में लिखते है– ***अनित्या शुचिदः खानात्मसु नित्य शुचि सुखात्मख्यातिर विद्या।*** यह योगसूत्र का वचन है जो अनित्य संसार और देहादि में नित्य अर्थात् जो कार्यजगत देखा सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है, वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। अशुचि अर्थात् मलमय स्त्रीयादि के और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि दूसरा, अत्यन्त विषय सेवनरूप दुःख बुद्धि आदि तीसरा, अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या कहाती है। इसके विपरीत अर्थात् अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्रा, दुःख में दुःख, सुख में सुख,

– शेष पष्ठ ६ पर

अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यवसनों से अलग रहने और सत्य भाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित न्याय, धर्म की वद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना प्रकार वे बन्धन का कारण मुख्य रूप से अधर्म और अज्ञान को मानते है। समस्त दुःखों से छूटकर सर्वदा आनन्द में रहना मुक्ति और आवागमन के चक्कर में भटकते रहना ही बन्धन है।

बोध कथा

जिह्वा को वश में रखिए

— महात्मा आनन्द स्वामी

एक थे सेठजी। खांसी लग गई उन्हें, परन्तु उन्हें आदत थी खट्टा दही, खट्टी लस्सी, खट्टा अचार और इसी प्रकार की दूसरी वस्तुएं खाने की। जिस वैद्यजी के पास जाते, वह कहता — "ये वस्तुएं खाना छोड़ दो, उसके पश्चात् चिकित्सा होसकती है।"

अन्त में एक वैद्यजी मिले उन्होंने कहा— " मैं चिकित्सा करता हूं। आप जो चाहें, खाते रहिए।"

वैद्य जी ने औषधि दी। ये सेठजी खट्टी बस्तुएं खाते रहे। कुछ दिन के पश्चात् सेठजी मिले तो बोले — "वैद्यजी ! खांसी बढ़ी तो नहीं परन्तु कम भी नहीं हुई।"

वैद्य जी ने कहा — "आप मेरी दवाई खाते रहिए, खट्टी चीजें भी खाते रहिए, इससे तीन लाभ होंगे।"

सेठ जी ने पूछा — कौन—कौन से?

वैद्यजी बोले — "पहला यह कि घर में चोरी कभी नहींहोगी, दूसरा यह कि कुत्ता कभी नहीं काटेगा और तीसरा यह कि बुढ़ापा कभी नहीं आएगा।"

सेठजी ने कहा — "ये तो वस्तुतः लाभ की बातें हें, परन्तु खांसी में खट्टी वस्तुएं खाने से यह सब कुछ होगा कैसे?"

वैद्यजी बोले — "खांसी हो और खट्टी वस्तुएं खाते रहिए, तो खांसी कभी अच्छी होगी नहीं। दिन में खांसोगे, रात में भी, तब चोर कैसे आएगा? खांस—खांसकर हो जाओगे दुर्बल। लाठी के बिना उठा नहीं जाएगा। चला नहीं जाएगा। हर समय लाठी हाथ में रहेगी तो कुत्ता कैसे काटेगा? और दुर्बलता के कारण मर जाओगे, यौवन में ही। तब बुढ़ापा आएगा कैसे?"

सेठ जी को समझ आ गई। परन्तु प्रायः हमें समझ नहीं आती। इस चटोरी जिह्वा के लिए पता नहीं, हम क्या—कया करते हैं, किस प्रकार अपना नाश करते हैं। सबसे बढ़कर अपनी मानवता को खो बैठते हैं। ❑

ब्रह्म-सूत्र

द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (28)

— डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'

<u>**आत्मनि चैव विचित्राश्च हि।।२८।।**</u>

अर्थ :- (आत्मनि) परब्रह्म परमात्मा में (च) तो (एव) ऐसी (विचित्राः) विविध प्रकार की शक्तियाँ हैं (च) और (हि) क्योंकि।

भावार्थ :- क्योंकि परमात्मा में उसके संकल्प के अनुसार विविध प्रकार के जितने भी अंश में या सम्पूर्ण प्रकति में आवश्यकतानुसार क्रिया या प्रेरणा कर सकता है, जैसे जीवात्मा में व्याप्त संकल्प से शरीर के इन्हीं शब्दों में दष्टान्त भी निहित है।

आत्मा अवयव रहित है। किसी कार्य को करने के लिए उसमें (सम्पूर्ण आत्मा में) संकल्प होता है, परन्तु वह संकल्प शरीर के किसी एक हिस्से में या सारे शरीर में क्रिया उत्पन्न करता है। वह कहते हैं कि आत्मा परिच्छिन्न है। उसके लिए एक भाग में क्रिया करना संभव है, सर्वव्यापक ब्रह्म के लिए नहीं। परन्तु यहाँ इस बात पर ध्यान देना होगा कि निरवय आत्मा का जैसा संकल्प सारे शरीर में क्रिया उत्पन्न करता है, वैसा ही संकल्प एक भाग में क्रिया उत्पन्न करता है। इसी प्रकार निरवय सर्वत्र व्यापक परब्रह्म का संकल्प अपेक्षित प्रदेश में क्रिया उत्पन्न करता है। जगत् के उपादान तत्व प्रकति रूप सत्व रजस् और तमस् असीमित हैं। ब्रह्म का सष्टि रचना का संकल्प विभिन्न तत्वों को प्रेरित कर जगत् के रूप में परिणित करता है। उसकी विविध प्रकार की अनन्त शक्तियों की कोई सीमा नहीं है। उसका संकल्प विविध प्रकार से अनन्त रूपों में दिखाई देता है। इसमें किसी प्रकार का विरोध नहीं है। इसीलिए ब्रह्म के संकल्प से प्रकति के अपेक्षित अंश जगत् के रूप में परिणित होते हैं। यह कारण एवं कार्य की स्थिति के पर्याय का क्रम ब्रह्म की व्यवस्था के अनुसार चलता रहता है। ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि किसी भी समय प्रकति का पूर्ण परिणाम नहीं होता। जैसा भी परिणाम होता है उससे ब्रह्म की जगत् के जन्म आदि की करणता में कोई बाधा नहीं पड़ती।

इसी बात की पुष्टि के लिए सूत्रकार ने अगले सूत्र में एक साधारण सर्वमान्य व्यवस्था को हेतुरूप में प्रस्तुत किया है।

— सी-२ए/६० जनकपुरी,
नई दिल्ली-५८

Question & Answer

Jap of Gayatri Mantra

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : I am fascinated by the concept of rebirth. I am not happy with my life the way it is, I want to bear my suffering first and die and hire a new body and want a desired birth. Please suggest. **Jaideep**

Ans. : According to the religious path, even to think about suicide, is a sin. Human body is blessed by God to face the sorrows etc., according to the deeds done in previous lives. Suppose a person commits suicide, it means he has not faced his deeds of remaining life. It means the deeds which he did not face, will be counted to be faced in the following life, after taking rebirth. Moreover, rebirth is also awarded by God according to the past and present lives' deeds. When a person has committed the sins in the present life, how can he say that he will take rebirth of human life? He may be a snake, rat, lizard, animal etc., etc. and has to face more sorrows than those faced in human life. So one should never be nervous but must do hard deeds, to get progress. You are advised to listen Vedas and learn how to perform Yajyen, name jaap of God, Asan, Prannayam, meditation etc. You may come here also for a week or so to get spiritual advice otherwise you may seek an Acharya locally. I have written some spiritual books according to Vedas, study of which will give you peace. The books can be sent on demand on receipt of your postal address. Please, do not be nervous. Be brave and go ahead for hard working and pious deeds i.e., worship etc. You may send E-mail at any time quoting your problem, to be solved.

Q. : Can I do Gayatri jap while traveling and working?

Prashant Bhatia

Ans. : Yes, you may recite Gayatri jaap with in heart while discharging duties or travelling etc. In addition, you must also do Havan with Gayatri mantra daily, which is worship of God.

Q. : Is it safe to chant the Kaamdev Gayatri mantra by any one?

वाल्मीकि रामायणे जीवनदर्शनम्

गत अंकेन क्रमेषुः-

वालमीकि रामायणं खलु सर्वेषां मानवोपयोगिनां विषयाणां रत्नाकर एवास्ति। रामायणकविमहर्षि बाल्मीकिः न कपपि विषयमुपेक्षते। स स्वकीयया विमलया आर्षदशा सर्वमवलोकयति तच्च सम्यक् प्रकाशयति। तद्यथा लोकमनुशासितुं राष्ट्रं च रक्षितु राज्ञः राजधर्मस्य च अनिवार्यत्वं स्वतः सिद्धम्। "अराजकं राष्ट्रं सर्वथा विनश्यति"– इत्यस्ति सार्थवती स्वस्था चावधारणा बाल्मीकिमुनेः। दशरथे विंगते सति अयोध्याराज्यं प्रति चिन्तितानां ब्राह्मणानं मुखेन वर्णय्यति ऋषिकविः–

इक्ष्वाकूणामिहाद्यैव राजा कश्चिद् विधीयताम्।
अराजकं हि नो राष्ट्रं न विनाशमवाप्नुयात्।। २/५१/६
नराजके जनपदे योगक्षेमः प्रवर्तते।
न चाप्याराजके सेना शत्रून विषहते युधि।। २/५१/२२
नाराजके जनपदे स्वकं भवति कस्यचित्।
मत्स्या इव नरा नित्यं भक्षन्ति परस्परम्।। २/५१/२५

अराजकस्य राष्ट्रस्य दुर्दशां प्रदर्शयन् राज्ञां महत्वं तेषां च कर्तव्यमपि निर्धारयति कविर्मनीषी। तन्मते सत्यधर्मयोः संरक्षकः प्रजानां च हितकरः राजा एव प्रशंसनीय :–

यथा दष्टिः शरीरस्य नित्यमेव प्रवर्तते।
तथा नरेन्द्रो राष्ट्रस्य प्रभवः सत्यधर्मयोः।। २/५१/२७
राजा सत्यं व धर्मश्च राजा कुलवता कुलम्।
राजा माता पिता चैव राजा हितकरो नणाम्।। २/५१/२८

वाल्मीकिरामायणस्य प्रणेता – "यथा राजा तथा प्रजा" इत्यस्य सिद्धान्तस्य प्रबल समर्थकास्ति। यतो हि रामाणस्य राज्ञो रामस्य प्रजा अपि धर्मपरायणा आसीत्। रामराज्यं वर्णयन् व्याहरति रामयणकविः–

– क्रमशः

सरल सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का

Purushotham

Ans. : I think there is no Kamdev Gayatri mantra in Vedas. Vedas tell about Gayatri mantra only which must be recited. One should also do Havan with Gayatri mantra daily which is worship of God.

Q. : Why we are not using flowers in yagnya? **Dhanesh Padhya**

Ans. : Dried leaves of every flower can be mixed in Havan samagri which is offered in pious burning fire while performing Yajyen, please.

To be continued...

वेद–वाणी

साधना चैनल

हर रविवार सायं 6.55 बजे

रविवार 2 मार्च, 2008

–: प्रवचन :–

आचार्य अखिलेश्वर जी

–: प्रसारण-सहयोगी :–

आर्यसमाज कीर्ति नगर

नई दिल्ली–110015 **एवं**

श्री धर्मपाल आर्य एवं परिवार

सुशील जनरल स्टोर

आर. जेड़ – ई– 140, निहाल विहार,

नई दिल्ली–110041

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – **सम्पादक**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव

एवं वेदवाणी प्रसारण के तीन वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

भव्य भजन संध्या

फाल्गुन क० दशमी वि० २०६४

तद्नुसार रविवार २ मार्च, २००८

स्थान : आर्यसमाज कैलाश, ग्रेटर कैलाश, पार्ट-१, नई दिल्ली

इस अवसर पर गत वर्षों में वेदवाणी प्रसारण में सहयोग देने वाले महानुभावों को सम्मानित भी किया जाएगा।

आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

आवश्यक सूचना

आयोजन स्थगित

खेद के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज ग्रीनपार्क नई दिल्ली में २ मार्च, ०८ को प्रातःकाल आयोजित महर्षि जन्मदिवस समारोह किन्हीं कारणों से स्थगित कर दिया गया है।

– कर्मचन्द नन्दवानी, मन्त्री

निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

नवम् समुल्लास : विद्या-अविद्या बन्ध और मोक्ष

गतांक से आगे :-

मुक्ति के बाद जीव फिर से देह धारणा करता है। मुक्ति की यह स्थिति 'महाकल्प' तक रहती हैः अर्थात् ३६०० बार सष्टि की रचना और विनाश के काल के समान काल तक रहती है। लौटकर फिर से जन्म में आता है, यह जानते हुए भी मुक्ति का उपाय उसी तरह करना चाहिए जिस तरह मत्यु को निश्चित जानकर भी जीवन का उपाय किया जाता है। ये उपाय चार साधनों के माध्यम से किये जाते हैं। इनमें से प्रथम साधन 'सत्संग' द्वारा इन बातों का ज्ञान प्राप्त करना हैः अन्नमय–प्राणमय–मनोमय–विज्ञानमय और आनन्दमय नाम के जीव के पांच कोश, जागत–स्वप्न–सुषुप्ति–नाम की तीन अवस्था, भौतिक–अभौतिक–कारण और तुरीय नाम के सूक्ष्म शरीर के चार भेद, आदि द्वितीय साधन 'वैराग्य' हैः अर्थात् पूर्वोक्त बातों के ज्ञान से उत्पन्न विवेक द्वारा सत्याचरण का ग्रहण एवं असत्याचरण का त्याग। तीसरा साधन शम-दम-उपरति-तितिक्षा-श्रद्धा समाधान के रूप में 'षट्क सम्पत्ति' को प्राप्त करना है। चतुर्थ साधन मुक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य बात में रूचि न रखना है। ''मुमुक्षु'' इन चारों साधनों से युक्त पुरूष ही मोक्ष का अधिकारी होता है। उसके लिए मुक्ति 'प्रतिपाद्य' हो जाती है। तब वह सब शास्त्रों के प्रतिपाद्य विषय 'ब्रह्म' की प्राप्ति को ही अपना 'विषय' मनाकर सच्चा 'विजयी' हो जाता है। इस सब का प्रयोजन होता है दुःखों की निवत्ति और परमानन्द पाकर मुक्ति सुख पाना। इसके लिए साधक को श्रवण–मनन–निदिध्यासन एवं साक्षात्कार केरूप में श्रवणचतुष्ट्य का साधन करना चाहिए। तभी अविद्या, अहंभाव, राग, द्वेष, और शरीर में सदा बने रहने की भावना रूप पांच क्लेशों से छूटकर मुक्ति को भोगने के योग्य बन सकता है। इसे पाने के लिए अनेक जन्मों तक साधना करनी होती है। स्वर्ग का अर्थ सुखमय स्थिति को पाना है। कर्मो के अनुसार ही जीव विविध योनियों में जन्म लेता है। उनके द्वारा ही वह इस बन्धन से छूटने में भी समर्थ होता है।

–: साभार :–

सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

जन्मदिवस 22 फरवरी पर विशेष

आर्यसन्देश – प्रथम अंक : प्रेरक व्यक्तित्व

आर्यनेता भूतपूर्व महापौर स्व० लाला हंसराज जी गुप्त

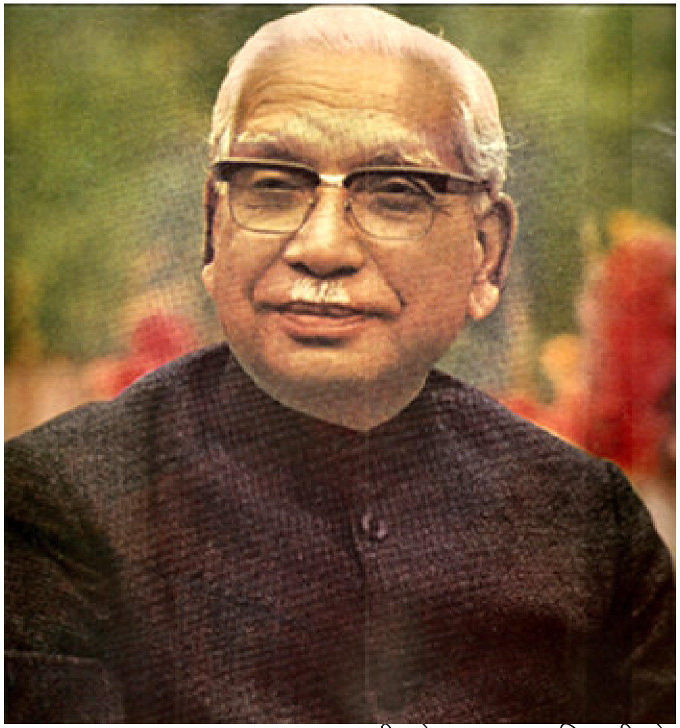

लाला हंसराज गुप्त का जन्म २२ फरवरी, १९०५ में वैसे तो रिवाड़ी (हरियाणा) में हुआ, लेकिन इनके पूर्वज बहरोड़ (अलवर) के निवासी थे। इनके पिता ला० गुलराज गोपाल जब नीमच (मध्य प्रदेश) में रेलवे के अधिशाषी अभियन्ता थे, तब उनका विवाह वहां ही हो गया था। इनकी माता श्रीमती लीलावती के पिता वहां के एक समद्ध व्यापारी थे। रिवाड़ी में इनके पिता रेलवे की नौकरी के सिलसिले में ही आकर बस गए थे, जहां इनका जन्म हुआ था।

कुछ दिन इनके पिता फर्रुखाबाद (उत्तरप्रदेश) में भी रहे, जहां इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई थी। बाद में नौकरी के कारण अजमेर चले गए जहां वहीं के गवर्नमेंट हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा सन् १९१९ में उत्तीर्ण की। गवर्नमेंट कॉलेज अजमेर से सन् १९२१ में इण्टर करने के उपरान्त श्री हसंराज ने आगरा कॉलेज में प्रवेश लिया और वहां से सन् १९२३ में बी०ए० किया। इसके बाद इंजीनियरिंग की उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से इन्होंने रूड़की इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया, लेकिन विधि को कुछ और ही मंजूर था। जब इंजीनियर बनने की इनकी साध पूरी न हो सकी तो इन्होंने उच्चतम शिक्षा के लिए दिशा में कुछ कार्य करने और आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिला। इनके श्वसुर महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त और उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता तथा पोषक थे। अपनी इस पावन भावना से प्रेरित होकर लाला रघुमल ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनुरोध पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ' में एक विशाल छात्रावास बनवाया। यह गुरूकुल तुगलकाबाद स्टेशन के पास पहाड़ी पर है और वहां छात्रावास का यह भवन आज भी ला० रघुमल जी की दानशीलता का कीर्तिगाथा के उज्ज्वल कलश के समान दिखाई देता है। उनके विद्याप्रेम का एक और ज्वलंत उदाहरण चावड़ी बाजार दिल्ली का –इन्द्रप्रस्थ वैदिक पुस्तकालय है जिसकी

लालाजी के श्वसुर व पिताजी ने उनमें समाजसेवा का जो बीज रोपा था, धीरे–धीरे वह अंकुरित होकर पल्लवित होने लगा और एक दिन ऐसा भी आया जबकि सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रों में काम करने वाली अनेक संस्थाओं से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। इन्हीं दिनों इन्हें आर्यसमाज हनुमान रोड का अध्यक्ष बनाया गया। अपने इस कार्यकाल में

में इन्होंने यथासंभव प्रवेश किया। 'इन्द्रप्रस्थ सेवक मण्डली' के माध्यम से जहां इन्होंने स्काउटिंग की भावना को अपने अन्तर में संजोया, वहां कांग्रेस की प्रवत्तियों तथा जन आन्दोलनों में भी अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार योगदान दिया। यहां तक कि सन १९४२ की क्रांति के समय तो इन्होंने अपने को भारी संकट में डालकर श्रीमती अरूणा आसफअली को भूमिगत रखने की दिशा में जो किया, उसका स्मरण करके आज भी रोमांच हो आता है। उन्हीं दिनों जेल में गये हुए अनेक साथियों के परिवारों की देखरेख करते रहना भी इनका एक काम था जिसको इन्होंने अपना प्राथमिक और सर्वोपरि कर्त्तव्य समझा। लाला हंसराज गुप्त सन् १९४३ से १९४५ तक कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता रहे। लेकिन मुस्लिम लीग को प्रोत्साहन देने की भावना से उन्हें कांग्रेस से अलगाव होने लगा। वह भारत विभाजन के भी विरूद्ध थे, परन्तु जब भारत विभाजन का प्रस्ताव महात्मा गांधी ने मान लिया तो उन्हें दुःख हुआ और मन में प्रतिक्रिया हुई कि हिन्दुओं को संगठित किया जाए। सन् १९४४ में दिल्ली के सनातन धर्म उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ''राष्ट्रीय स्वयंमेव संघ' के उत्सव में

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया और वहीं से १६२५ में एम०ए०, एल०एल०बी० किया।

इस बीच दिल्ली के प्रतिष्ठित रईस ला० रघुमल की एकमात्र पुत्री अंगिरा जी से १६३४ में इनका विवाह हो गया और इनका कार्यक्रम ही बदल गया। १६२५–२६ में लगभग ७–८ मास तक इन्होंने अपने श्वसुर ला० रघुमल के व्यावसायिक प्रतिष्ठान का कार्य देखा। यह प्रतिष्ठान कलकत्ता में था। इसका नाम था ''माधोराम हरदेवरास'' इनके श्वसुर लोहे के बहुत बड़े व्यापारी थे। इनका कारोबार उन दिनों देश के अनेक प्रमुख नगरों में फैला हुआ था। ५ सितम्बर १६२६ को, जिस दिन इन्होंने चाटर्ड एकाउन्टेंसी की उच्चतम परीक्षा के लिए विदेश जाना था, उसी दिन इनके श्वसुर का देहान्त हो गया। अपनी मत्यु से पूर्व इनके श्वसुर ने जो वसीयत लिखी थी, उससे व्यवसाय का मुख्य भार हंसराज जी के ऊपर आ गया। फलतः सन् १६२६ से १६३० तक सर्वप्रथम इन्होंने उस फैले हुए व्यापार को सीमित करके इनके ऊपर लदी हुई देनदारी को निपटाया। इन सब झंझटों से तंग आकर सन् १६३० में यह दिल्ली आ गए और तभी से यहीं रहे।

दिल्ली में इनके श्वसुर का कार्य दिल्ली आयरन सिंडकेन्ट नामक फर्म के माध्यम से होता था। १६३१ में इस संस्थान का कार्यभार भी इनके ऊपर आ गया। इनके श्वसुर की बहुमुखी समाज सेवाओं के कारण इन्हें भी इस स्थापना उन्होंने कूचा राजा दयाराम में की थी।

''दिल्ली आयरन सिण्डीकेट'' के माध्यम से लाला जी ने अपने व्यवसाय को उत्तर भारत में इतना बढ़ाया कि १६३१ से १६३४ तक के वर्षों में दिल्ली और समीपवर्ती प्रदेशों की जनता ने उन्हें अपना अपार, अनन्य और उल्लेखनीय स्नेह, प्रदान किया। उससे प्रोत्साहित होकर समाज सेवा के क्षेत्र में वे धीरे–धीरे आगे आने लगे। परिणाम स्वरूप सन् १६३२–३३ में 'आयरन एण्ड हार्डवेयर एसोसिएशन 'दिल्ली के अध्यक्ष के रूप में लालाजी ने समाज सेवा के जीवन का आरम्भ हुआ। सन् १६३५ में इनके पिता जी रेलवे की नौकरी से रिटायर होकर दिल्ली आ गए और उन्हीं के निरीक्षण में तथा उनके प्रयत्न से ही २० नम्बर बाराखम्भा रोड की कोठी १६३५ में बनी जिसमें वह मत्युपर्यन्त रहे।

लाला हंसराज के पिता जी आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। दिल्ली में आने पर जब वह ला० नारायण दत्त जी ठेकेदार के सम्पर्क में आए तो इनकी गतिविधियां इस क्षेत्र में और भी बढ़ गयीं। अनेक समाजसेवी संस्थाओं के निर्माण और विकास में योगदान देना जैसे इनके जीवन का क्रम ही बन गया था। उन्हीं की प्रेरणा से लालाजी भी इस दिशा में उन्मुक्त मन से सहयोग करने लगे। लालाजी अधिक समय तक उनका स्नेह प्राप्त न कर सके और सन् १६४२ में उनका वरदहस्त लालाजी के सिर से अचानक उठ गया।

इन्होंने सब से पहिले अपने पूज्य श्वसुर लाला० रघुमल की स्मति में संस्थापित आर्य कन्या पाठशाला को 'रघुमल हायर सैकेण्ड्री स्कूल' का रूप देकर उसके लिए राजा बाजार नई दिल्ली में एक भव्य भवन का निर्माण कराया। इस स्कूल की आज दो शाखाएं, एक तो रघुमल आर्य पब्लिक स्कूल जो उसी परिसर में है, और दूसरी इसका प्राइमरी स्कूल जो डॉक्टर्स लेन गोल मार्किट में स्थित है।

सन् १६३३–३५ से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से भी इनका निकट का सम्बन्ध था। वे तब से इसके आजीवन सदस्य थे और इसी नाते बीच में उसकी कार्यकारिणी समिति के भी सदस्य रहे। इनके पिताजी जब अजमेर में थे तो वहां महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित परोकारिणी सभा के सदस्य भी रहे। उन्हीं संस्कारों के कारण लालाजी का भी लगाव इस संस्था के साथ स्वाभाविक था। कई वर्ष तक ला० हंसराज इस संस्था के प्रधान रहे। आर्यसमाज हनुमान रोड का सदस्य होने के नाते उनका आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से भी निकट का सम्बन्ध रहा और कुछ दिन वे उसके उपाध्यक्ष भी रहे। इसी सम्बन्ध ा के कारण सभा के प्रबन्धन में संचालित होने वाली प्रख्यात शिक्षण संस्था 'गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की गुरूकुल फार्मेसी के निरीक्षण का दायित्व भी लालाजी के ऊपर काफी दिन तक रहा और चार पांच वर्ष वे उसके 'व्यवसाय पटल' के भी अध्यक्ष रहे।

समाज सेवा के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र पहलीबार लाला हसंराज गये । उन्हें वहां का अनुशासन अच्छा लगा। वह वहीं श्री गोलवरकर जी के सम्पर्क में आए। १६४५ में वह ''राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ'' के संचालक बना दिए गए। संघ में आने से पूर्व इन्होंने देश की आजादी में काफी योगदान दिया और कई जोखिम उठाए।

कस्तूरबा गांधी स्मारक के लिए ७ लाख रूपये का एक फण्ड स्थापित किया गया जिसके संचालक भी हंसराज जी थे। लाला हंसराज को राष्ट्रीय आन्दोलन में कूदने की प्रेरणा लाला लाजपतराय, बाल लोकमान्य गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, स्वामी श्रद्धानन्द तथा डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी से मिली। लाला लाजपतराय के तो वे भक्त थे।

लाला हंसराज गुप्त एक कर्मठ सामाजिक, कार्यकर्ता थे। इन्होंने सैकड़ों संस्थाओं को जीवनदान दिया। कितने ही स्कूल, कॉलेज इनकी सहायता से चल रहे हैं। इन्द्रप्रस्थ कॉलेज, हिन्दू कॉलेज, बाल भारती पब्लिक स्कूल तथा रघुमल आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना में इन्होंने भरपूर योगदान दिया। देश के किसी भाग में भी कोई दैवी आपदा आई तो इन्होंने तन-मन-धन से सेवा की। दीवानचन्द ट्रस्ट में भी योगदान दिया।

इतना कुछ करने पर भी अभिमान इन्हें छू तक नहीं गया था। वह एक ऋषि की भांति शांत और गंभीर रहते थे। इनका मत था कि जो पास है उसी में प्रसन्न रहना चाहिए। सन्तोष ही उनका सबसे बड़ा धन था।

– शेष पष्ठ ६ पर

पृष्ठ 5 का शेष

लालाजी का व्यक्तित्व किसी को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। वह पूरीतरह स्वावलम्बी थे। अपना सारा काम स्वयं करना पसन्द करते थे। एक बार कपड़ों पर इस्तरी कर रहे थे कि घुटना जला बैठे। यह बचपन की बात है। घर का नल, बिजली की फिटिंग और कार की मामूली मरम्मत करना उन्हें आता था। लालाजी पूरी तरह से शाकाहारी थे, जो मिल जाए खा लेते थे। पूड़ी से उन्हें चिढ़ थी परन्तु आलू मटर के परांठो के बेहद शौकीन थे। मटर की खिचड़ी भी इनका प्रिय खाद्य रहा ।

दिल्ली के सामाजिक जीवन में लालाजी का आरम्भ से ऊँचा स्थान था, किन्तु जब वह पहली बार १९६७ में महापौर बने तो दिल्ली के सामाजिक और सांस्कतिक जीवन पर छा गए। श्री गुप्त जी पहले व्यक्ति थे जिन्हें महापौर पद पर निरन्तर पांच बार चुने जाने का गौरव प्राप्त किया था। यह किसी भी भारतीय के लिए गर्व की बात हो सकती है, किन्तु वे इसके अपवाद थे। यदि यह कहा जाए कि वे भारतीय जीवन के आदर्श 'सादा जीवन उच्च विचार, के अनन्तमय उदाहरण थे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

महापौर के नाते वह नीति बनाने वाले पक्ष के प्रमुख थे और उनके मार्गदर्शन में निगम जनता को अधिक नागरिक सुविधाएं जुटाने के कार्य में लगा रहा। राष्ट्रपति द्वारा उन्हें उच्चतम कि लालाजी सच्चे हिन्दू थे और हिन्दी उनकी आत्मा थी।

सौम्यता, सरलता और विनम्रता उनके रोम–रोम में रमी थी। भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण की उपाधि से अलंकत किए जाने पर एक स्वागत समारोह में बोलते हुए उन्होंने कहा था, ''मेरे जीवन में मिली सफलता का श्रेय मेरे कार्यों को नहीं, अपितु मेरे सहयोगियों और मित्रों की सद्भावना और सतत सहयोग को है। ऐसी थी उनकी सरलता।

राजहंस सा नीर–क्षीर विवेक लिए हंसराज जी का व्यक्तित्व निर्मल था। सम्पर्क से ऐसा आभास होता था जैसे–भारतीय संस्कति सजीव रूप धारण करके सामने खड़ी है। राजनीति की दलदल से वह उसी प्रकार निर्लेप थे जैसे जल में कमल।

उनके सामाजिक व धार्मिक कार्यों में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अंगिरा देवी का सहयोग सदैव रहा।

कुछ अर्से की बीमारी के बाद लाला हंसराज गुप्त का निधन सन् १९८५ में हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से पूज्य लाला जी के जन्मदिवस पर शत्-शत् नमन। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे हम सभी को उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा, शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करें। – *सम्पादक*

पृष्ठ 3 का शेष

अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है। अर्थात् 'वेत्ति यथावत तत्वं पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे, वह विद्या और जिससे तत्वस्वरूप न जान पड़े, अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है। 'इसीलिए केनोपनिषद् के ऋषि कहते हैं–

प्रतिबोध विदितं मतममत्वं हि विन्दते। आत्मना विन्दते वीर्य विद्यया विन्दते मतम्।। (२–४)

अर्थात् प्रतिबोध से जाना गया ब्रह्म यथार्थ ज्ञान है। इस ब्रह्म–ज्ञान से मुमुक्षु पुरूष निश्चय से मत्युरहित जीवन्मुक्त दशा को प्राप्त होता है। आत्मस्वरूप ज्ञान से योगबल अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त होता है और ब्रह्मवल्क्य जी का कहना है– ***अयं तु सत्यधर्मो यत्योगेन आत्मदर्शनम्।*** महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं–

'समाधिनिर्धूतमलस्रू चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं में भवेत। न शक्यते वर्णयितु गिरा तदा स्वयन्तदन्तः करणेन गहयते।।

यह उपनिषद् का वचन है– जिस पुरूष के समाधियोग से अविद्यादि मल नष्ट हो गये हैं, आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिसने लगाया है उसको जो परमात्मा के योग का सुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जा सकता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है। 'यही स्थिति उपासना की प्राप्ति है अर्थात् समाधि के लिए ही व्यक्ति योगाभ्यास करता है। यह स्थिति अपने स्वरूप को पहचानने की है। अपनी पहचान ही परमात्मा की सिद्धि और मुक्ति दिलाने वाली है। इस सम्बन्ध में योगीराज श्रीकष्ण का कथन है– ***'ध्यान और समाधि में इतना ही भेद है कि ध्यान में तो ध्यान करने वाला जिस मन से जिस चीज का ध्यान करता है, वे तीनों विद्यमान रहते है। परन्तु समाधि में केवल परमेश्वर ही के आनन्द स्वरूप ज्ञान में आत्मा मगप हो जाता है, वहां तीनों का भेद भाव नहीं रहता। जैसे मनुष्य जल में डुबकी मारके थोड़ा समय भीतर ही रुका रहता है वैसे ही जीवात्मा परमेश्वर के बीच में मगन होके फिर बाहर को आ जाता है....जैसे अग्नि के बीच में लोहा भी अग्नि रूप हो जाता है, इसी प्रकार ईश्वर के ज्ञान में प्रकाशमय होके अपने शरीर को भी भूले हुए के समान जानके आत्मा को परमेश्वर के प्रकाशस्वरूप आनन्द और ज्ञान में परिपूर्ण करने को समाधि कहते हैं।'*** *(ऋ०भा०भू०)*

– महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर, जिला - मण्डी

दो दिवसीय राष्ट्रीय वेद गोष्ठी सम्पन्न

नागरिक सेवाओं के लिए ''पद्म भूषण' की उपाधि मिलने से महापौर पद का महत्व और बढ़ गया।

बहुमुखी प्रतिभा एवं निश्छल स्वभाव के धनी लाला हंसराज गुप्त की वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में भी सराहनीय भूमिका रहीं। वे इन्द्रप्रस्थ कॉलेज एवं हिन्दू कॉलेज ट्रस्ट के अध्यक्ष तथा गवर्निंग बॉडी के सदस्य रहे। इन दो प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थाओं के अरिरिक्त अनेक अन्य स्कूल आपकी अध्यक्षता के अन्तर्गत सुसंचालित थे। उपर्युक्त बहुमूल्य गुणों के साथ ही लालाजी के व्यक्तित्व की एक और विशेषता यह थी कि वह भारतीय संस्कति और भाषा के अनन्य पोषक थे। यही कारण है कि वह जीवन में जहाँ और जिस पद पर रहे, हिन्दी के उत्थान हेतु बराबर यत्न करते रहे। उनके स्वयं के जो संस्थान थे, उनमें सारा हिसाब किताब हिन्दी में ही रखे जाते थे। ज्ञातव्य रहे कि जबसे निगम में महापौर पद पर रहे निगम द्वारा विशेष रूप से किये गये संकल्प संख्या ४३२ के अनुसार १५ अगस्त १९६६ से निगम के समस्त कामों में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को माध्यम बनाया। उस काल में निगम में हिन्दी के विकास को जिस गति से आगे बढ़ाया, उससे पता चलता है कि निगम में प्रयुक्त होने वाले रजिस्टरों, फार्मों व सूचियों का हिन्दी में अनुवाद किया गया था। निगम के कार्यो को सुचारूता लाने के लिए कार्यालय–मार्गदर्शिका एवं शब्द संग्रह नामक पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा

वेद और वैदिक मन्तव्यों पर विभिन्न मत–मतान्तरवादी जन तथा ईश्वरीय ज्ञान, वेद की महत्ता से अनभिज्ञ कुछ तथाकथित आर्य नामधारी जन यदा-कदा आक्षेप करते रहे हैं। वेद-चिन्तक विद्वान् उन विषयों पर तथ्यात्मक सत्य पक्ष प्रस्तुत करते रहे हैं। तथाति विगत् कुछ समय से उन्हीं घिसे–पिटे प्रश्नों एवं भ्रान्तियो को नये रंग–रूप में प्रचारित किया जा रहा है। अतः आधुनिक शोधपरक दष्टि से उन प्रश्नों का समाधान करने के लिए देशभर के प्रख्यात वैदिक विद्वानों की दो दिवसीय राष्ट्रीय वेद–गोष्ठी का आयोजन शनिवार, रविवार, क्रमशः ९ व १० फरवरी, २००८ को आर्य समाज डी–ब्लाक शात्रीनगर मेरठ में किया गया। वेद–गोष्ठी का आरम्भ शनिवार ९ फरवरी २००८ को पूर्वाह्न ११.०० बजे। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, लेखक और वक्ता तथा राज्यसभा के सदस्य माननीय डॉ० रामप्रकाश जी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र में अन्य वक्ताओं में गुरूकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के उपकुलपति प्रो० वेदप्रकाश जी तथा उत्तराखण्ड संस्कति अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ० महावीर अग्रवाल जी ने वेदार्थ–प्रणाली, वेदों की अपौरूषेयता तथा वैज्ञानिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस सत्र की अध्यक्षता मेरठ में गुरूकुल प्रभात आश्रम के आचार्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने की। वेद गोष्ठी में सर्वश्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (ब्र० वेदव्रत मीमांसक वडलूर), स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, प्रो० धर्मवीर जी, मंत्री परोपकारिणी सभा अजमेर, प्रो० विक्रम कुमार विवेकी चण्ड़ीगढ़, प्रो० बलवीर आचार्य रोहतक, प्रो० ज्वलंतकुमार शास्त्री अमेठी, डॉ० विनय विद्यालंकार लोहाघाट, प्रो० भीमसिंह जी, डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ० सोम वेदालंकार कुरूक्षेत्र, डॉ० कुशलदेव जी नांदेड, डॉ० ओम प्रकाश होलीकर लाटूर, डॉ० रामप्रकाश वर्णी एटा, डॉ० कष्णा आचार्य रोहतक, डॉ०जयदत्त उप्रेती, डॉ० प्रियम्वदा वेदभारती नजीबाबाद, डॉ० विजयलक्ष्मी, डॉ० वीरेन्द्र विद्यालंकार, स्वामी धर्मेश्वरानन्द तथा सी०एस०आर० प्रभु आदि विद्वानों ने सक्रियता से भाग लिया।

समापन सत्र की अध्यक्षता माननीय डॉ० धर्मवीर जी ने की। वेद–मंत्रार्थ दूष्टा, पूर्ण तत्वज्ञ, परमयोगी और महावैज्ञानिक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रतिपादित जो स्वरूप वेद का है उस पर आक्षेप करने वाले क्षुद्रात्मा स्वार्थीजनों को डॉ० धर्मवीर जी ने आड़े हाथों लिया।

– सत्येन्द्र सिंह आर्य

(हि०प्र०) - १७४४०१

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज रामपुरा कोटा (राज०)

प्रधान : श्रीमती रुकमणी देवी आर्या
मन्त्री : श्री रमेश गोस्वामी
कोषाध्यक्ष : श्री चन्द्रमोहन कुशवाह

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा आर्यम्गढ़ (उ०प्र०)

प्रधान : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद आर्य
मन्त्री : श्री नरेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राम नगीना आर्य

आर्यसमाज शिकोहाबाद फिरोजाबाद (उ०प्र०)

प्रधान : श्री विद्याराम शर्मा
मन्त्री : श्री रत्नेश कुमार कुलश्रेष्ठ
कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र कुमार दौनेरिया

महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती एवं दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव

१४ मार्च से १६ मार्च, २००८

वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहिमपुर-३६

यज्ञ : प्रतिदिन प्रातः ८ बजे ब्रह्मा : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
उपदेशक : डॉ० धर्मवीर एवं ब्र० सुमेधा आर्या

समापन समारोह एवं राष्ट्र जागति सम्मेलन : १६ मार्च, २००८

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंच कर धर्म का लाभ उठाएं।

– राकेश रानी (अध्यक्ष), डॉ. धर्मवीर (मंत्री)

आर्यसमाज शादीखामपुर एवं महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का ६६वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्‌घाटन सम्पन्न

"मनुष्य मन से अच्छे बुरे का अंतर समझ सकता है और सोचने समझने की शक्ति मनुष्य में उसके संस्कारों से आती है। जैसे मनुष्य के संस्कार होते हैं वैसे ही वह अपनी संस्कति को अपना सकता हैं और संस्कति वो है जिसका हम मन से विचार करते हैं और जो मन में रम जाती है।" हमारी अपनी संस्कति अनूठी है। हमारी अपनी संस्कति हमें सही तरीके से जीना सिखाती है।

ये वचन दिल्ली केन्द्रीय सभा के प्रधान जी धर्मपाल आर्य ने आर्यसमाज शादीपुर खामपुर के ६६ वें वार्षिकोत्सव समारोह में कहे। इसके साथ ही उन्होंने यज्ञ के लाभ बताते हुए कहा कि यज्ञ से प्रदूषण बिल्कुल समाप्त हो जाता है और यज्ञ का धुआँ जिस तरफ

जाएगा वहाँ कई सौ किलोमीटर तक फसलों में कीड़ा नहीं लगता। इसके अलावा यज्ञ आतंकवाद को दूर करने में भी मदद करता है।

इस वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ २१, २२ व २३, फरवरी को प्रभात फेरी से हुआ जिसमें कॉलोनी के लगभग चार में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्‌घाटन पटेलनगर क्षेत्र के विधायक एवं दिल्ली सरकार के मुख्य सचेतक श्री रमाकान्त गोस्वामी जी ने किया। इसके उपरान्त यज्ञ श्री ऋषिपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इसके बाद विद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोह दीपप्रज्वलन द्वारा आरम्भ हुआ। समारोह में श्री गोस्वामी जी, दीप पब्लिक स्कूल के चेयरमैन श्री सत्य प्रकाश, श्री तुलसीराम सबलानिया जी तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। विद्यालय के छोटे–छोटे बच्चों ने नैतिक शिक्षा, वैदिक संस्कति, योग शिक्षा, देशभक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रमों द्वारा सभी का मन मोह लिया। श्री सत्यप्रकाश जी ने विद्यालय में पुस्तकालय हेतु ११०००/– रूपये दान दिए। कार्यक्रम में मंच का संचालन प्रधानाचार्या श्रीमती सरोज यादव ने किया।

रविवार २४ फरवरी, २००८ को आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव का आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रातः ८.०० बजे यज्ञ में यज्ञमानों व सैकड़ों की संख्या में लोगों ने आहुति दी। यज्ञ के उपरान्त क्षेत्रीय निगम पार्षद श्री गुलशन भाटिया जी ने ध्वजारोहण किया और फिर सभा प्रारम्भ हुई। सभा में श्री भाटिया जी के साथ मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल आर्य जी (प्रधान केन्द्रीय सभा) श्री विनय आर्य (महामंत्री, दिल्ली आर्य समाजों के अधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे। आर्यवीर श्री सुन्दर जी ने अपनी कविता द्वारा सभी को मंत्रमुग्ध किया।

इस अवसर पर डॉ० सुनीति आर्या ने नारी की परिवार व समाज में भूमिका बताते हुए कहा कि नारी परिवार की रीढ़ है, परिवार की ब्रह्मा है और यदि महिलाएँ एकजुट होकर अच्छे संस्कारों व उत्तम विचारों को अपना कर आगे आए तो समाज की उन्नति को कोई नहीं रोक सकता और ये अच्छे संस्कार व उत्तम विचार उन्हें आर्यसमाज में ही मिल सकते हैं। इसलिए महिलाओं को अधिक से अधिक संख्या में आर्यसमाज में आना चाहिए।

श्री विनय आर्य ने आर्यसमाज शादीपुर खामपुर की गतिविधियों की सराहना करते हुए अधिकारियों को बधाई दी

और युवाओं को एकजुट होकर कार्य करते हुए आगे बढ़ने और समाज व राष्ट्र को मजबूत बनाने की अपील की। इस अवसर पर गत ऋषिबोधोत्सव पर विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार दिए गए। सभा की अध्यक्षता आर्यसमाज के प्रधान व विद्यालय के चेयरमैन श्री भगवान सिंह यादव जी ने की। आर्य समाज के मंत्री, प्रबन्धक श्री कपाल सिंह जी ने मंच का कुशल संचालन किया व आर्यसमाज की गतिविधियों एवं भावी योजनाओं का उल्लेख किया। भविष्य में भी आर्यसमाज से जुड़ने की अपील की तथा साथ ही वार्षिकोत्सव को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद किया। ❑

शोक समाचार

आर्ययोद्धा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

पं० सूर्यबली पाण्डेय का निधन

काशी १४ फरवरी, ०८ आर्य जगत

पाण्डेय ने दी।

पांच सौ लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समारोह से पहले आर्यसमाज प्रतिनिधि सभा) श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा (प्रधान कीर्ति नगर आर्यसमाज) व अन्य

आर्यसमाज, रामाकष्ण पुरम्, सै.-६, नई दिल्ली का
३६वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रामाकष्ण पुरम्, सैक्टर–६, नई दिल्ली का ३६ वॉं वार्षिकोत्सव रविवार, दिनांक १० फरवरी,२००८ को बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री अशोक सहदेव जी (उद्योगपति), सुपुत्र स्व० श्री रत्नलाल सहदेव जी ने की। इससे पूर्व ध्वजारोहण का कार्यक्रम श्री पुरूषोत्तम लाल गुप्ता, अध्यक्ष रत्न चन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर, द्वारा किया गया।

विशेष अतिथियों में श्रीमती बरखा सिंह, विधायका एवं अध्यक्षा दिल्ली महिला आयोग, ने आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। अन्त में आर्यसमाज के प्रधान श्री हरबंस लाल कोहली जी ने उपस्थित सभी आर्य महानुभावों तथा विभिन्न आर्य समाजों से पधारे हुए अधिकारियों का धन्यवाद किया और यह आह्वान किया कि हवन-यज्ञ का प्रचार बढ़ाया जाये और जिनको गायत्री मंत्र न आता तो, उनको गायत्री मंत्र सिखाया जाये तथा हिन्दू जाति को बचाने के लिए आश्रम व्यवस्था पर जोर दिया जाये, परन्तु जाति प्रथा को समाप्त किया जाना चाहिए।

– हरवंसलाल कोहली, प्रधान

आर्यसमाज रोहिणी सै-७ में
महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

२ मार्च, २००८ को प्रातः ८ से १० बजे तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस। ६ मार्च, ०८ को वेद प्रचार मण्डल उत्तरी–पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वावधान में यज्ञ ब्रह्मा आचार्य रामकिशोर शास्त्री समय सायं यज्ञ ६ से ७ बजे। अध्यक्षता – सन्तोष चौधरी, भजन प्रवचन ७.०० से ८.३० बजे तक। प्रवचन–आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आचार्य सत्यवीर जी के होंगे।

आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

– अश्विनी आर्य, मन्त्री

उत्तमचन्द जी शरद का ६२ वें जन्मदिवस पर
कवि सम्मेलन

पानीपत आर्य वीर दल तथा आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत ने संकल्प तत्वाधान में महात्मा उत्तमचन्द जी शरद का ६२ वें जन्म दिवस पर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया तथा शरर जी का एक चित्र आर्यसमाज के सभागार में लगाया गया ।

– राजेश आर्य (प्रचार मंत्री)

वैदिक वागमय के अप्रितम योद्धा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं० सूर्यबली पाण्डेय ६५ वर्षीय वयोवद्ध वैदिक विद्वान का उनके पैतक निवास कुटीर चक्के सरैया जौनपुर में ११ फरवरी २००८ दिन सोमवार की रात्रि में निधन हो गया। स्व० पाण्डेय जी प्रखर वक्ता, इतिहास मर्मज्ञ, कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्ता थे, आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वानों में उनकी गणना थी। वैदिक सिद्धान्त पर उन्होंने कई पुस्तके लिखी हैं। स्व० पाण्डेय जी की अन्त्येष्टि वैदिक विधि से मंगलवार को गोमती नदी जौनपुर भड़ेहरी घाट के श्मशान भूमि पर की गई। मुखाग्नि उनके ज्येष्ठ पुत्र सुधाकर शव यात्रा के समय उप जिलाधिकारी के० रावत जौनपुर, क्षेत्राधिकारी श्री के० के० सिंह, तहसीलदार, थानाध्यक्ष तथा आर्य समाजों के आर्यजनों ने भाग लिया तथा अपने प्रिय स्व० पाण्डेय जी को श्रद्धांजलियाँ दी।

वाराणसी वेद प्रचार मण्डल की शोक सभा महर्षि दयानन्द विद्यालय बड़ी गैणी अम्बेडकर पार्क वाराणसी में प्रधान अशोक कुमार त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुई जिसमें बताया गया कि सूर्यबली पाण्डेय का वाराणसी की आर्य समाजों व आर्यजनों से काफी गहरा लगाव रहा है।

१०२ वर्षीय आर्यनेता श्रीराममुनि का का निधन

आर्यसमाज त्रिनगर नई दिल्ली से जुड़े श्री श्रीराम मुनि जी का १०२ वर्ष की आयु में २० फरवरी, ०८ को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से २१ फरवरी को किया गया। श्री मुनि जी आर्यसमाज त्रिनगर के ३० वर्षों तक प्रधान रहे, वर्तमान में वे आर्यसमाज के संरक्षक थे।

श्री मुनि जी की स्मति में श्रद्धांजलि सभा/रस्म पगड़ी उनके निवास स्थान १७१८/१२५, शान्तिनगर, त्रिनगर, दिल्ली में शुक्रवार २६ फरवरी, ०८ को सायं ३ बजे सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ–साथ आसपास की अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। – सम्पादक

साप्तहिक आर्य सन्देश
25 फरवरी, 2008 से 2 मार्च, 2008
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २८/२६–०२–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन के 125वें वर्ष पर

आर्यसन्देश का विशेषांक

विभिन्न अवसरों पर प्रकाशित स्मारिकाएं एवं विशेषांक इतिहास का कार्य करते हैं। अप्रैल, 2008 में सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन के 125वें वर्ष के अवसर पर आर्यसन्देश का एक विशेषांक प्रकाशित होगा। इसका आकार पत्रिका के रूप में होगा जिसके पृष्ठों की संख्या लगभग 200 होगी तथा साज-सज्जा भी अत्युत्तम होगी। इसमें उच्चकोटि के जननेताओं, विचारकों, आर्य विद्वानों के लेख तथा विज्ञापन भी प्रकाशित होंगे। अतः लेखकों से निवेदन है कि वे अपने 'सत्यार्थ प्रकाश' या 'स्वामी दयानन्द के जीवन' से सम्बन्धित लेख 15 मार्च, 2008 तक सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। लेख 3 फुल स्केप पृष्ठों से अधिक नहीं होने चाहिए और पृष्ठ के एक ओर ही सुन्दर हस्त लिखित हो अथवा टाइप किया गए हों।

समस्त दानी महानुभावों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा व्यापारिक संस्थानों एवं अन्य सामाजिक तथा राष्ट्रवादी संगठनों से निवेदन है कि वे इस संग्रहणीय विशेषांक के लिए अपना विज्ञापन अथवा सहयोग राशि प्रदान करने की कृपा करें। विशेषांक का आकार एवं विज्ञापन दरें इस प्रकार हैः-

विशेषांक का आकार	:	11 इंच X 8.5 इंच
पूरा पृष्ठ	:	4000/- रुपये
आधा पृष्ठ	:	2500/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	:	1500/- रुपये

यज्ञ योग साधना शिविर का आयोजन

धर्म प्रेमी भाईयों–बहनों के लिए हरिद्वार में ''आर्य ट्रैवल'' के सौजन्य से यज्ञ योग साधना शिविर २६ मार्च से ३० मार्च, ०८ तक सुप्रसिद्ध विद्वान अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार एवं यज्ञ योग के श्रद्धेय आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री के पावन सानिध्य में आयोजित किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम में हरिद्वार के विभिन्न स्थानों के अतिरिक्त आप प्रातः नाश्ते के पश्चात् हरिद्वार में भिन्न–भिन्न स्थानों पर घूम सकते हैं। इसके अलावा आप ऋषिकेश या नीलकण्ठ की यात्रा एवं मसूरी की यात्रा करके वापिस हरिद्वार आ सकते हैं। इस कार्यक्रम में आप सभी के लिए हरिद्वार में ऐसा आश्रम बुक करवाया जाएगा जिसमें अचैच्ड बाथरूम वाले साफ सुथरे कमरे होंगे जिसमें आप अपने परिवार के हिसाब से बड़ा रूप भी बुक करवा सकते हैं। इस कार्यक्रम में खाना बनाने के लिए कारीगर दिल्ली से आएंगे।

यह कार्यक्रम पूरी तरह से PAID होगा क्योंकि आर्य ट्रेवल का काई आश्रम नहीं है।

पारिवारिक सुख समद्धि हेतु विराट गायत्री महायज्ञ, मधुमेह (डायबिटीज) रोग को दूर करने के उपाय तनाव, चिन्ता, क्रोध को दूर करने हेतु सारगर्भित प्रवचन सुमधुर भजन, प्राचीन जड़ी–बूटियों की पदर्शनी एवं यज्ञ द्वारा जटिल रोगों की चिकित्सा का व्यवधान होगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क –

आर्य ट्रैवल, विजय सचदेवा
२६१३/६, चूनामण्डी, पहाड़गंज,
नई दिल्ली-५५
दूरभाष-०११-२३५८८४८६,
चलभाषः ९८१११७११६६

विज्ञापन शुल्क चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "आर्यसन्देश" के नाम से सभा कार्यालय-15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर 15 मार्च, 08 तक भेजें।

-: निवेदक :-

ब्र० राजसिंह आर्य — प्रधान सम्पादक — 9350077858
विनय आर्य — सम्पादक — 9350204466
सुशील महाजन 'शील' — व्यवस्थापक — 9312667702
वेदव्रत आर्य (सहयोगी) राजेन्द्र दुर्गा (सहयोगी) 9818087360

वेद-धर्म-विज्ञान सम्मेलन सोत्साह सम्पन्न

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, द्वारा आयोजित वेद विज्ञान मन्दिर भागल भीम में द्विदिवसीय वेद–धर्म विज्ञान सम्मेलन का शुभारम्भ के साथ हुआ। यज्ञ का ब्रह्मत्व न्यास के संरक्षक पूज्य आचार्य स्वदेश जी मथुरा ने किया, एवं पौराहित्य कार्य पं० केशवदेव जी, सुमेरपुर ने किया। तत्पश्चात १–५ बजे तक वैदिक धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी, गुड़गांव ने वैदिक वर्ण व्यवस्था का विवेचन बहुत ही सुन्दर एवं सरल शब्दों में किया तथा देश की वर्तमान दुर्दशा के लिए जातिवाद को जिम्मेदार बताया। मुख्य अतिथि पूज्य स्वामी धर्मवन्धु जी महाराज ने कई विदेशी सभ्यताओं की समालोचनात्मक व्याख्या करते हुए बताया कि वैदिक संस्कृति से सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैला है। न्यास प्रमुख आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने कहा धर्मात्मा की पहचान आचरण से करनी चाहिए। सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य श्री स्वदेश ने की। भजनों का कार्यक्रम भजनोपदशक पं० केशवदेव ने प्रस्तुत किया। इसी दिन वेद विज्ञान मन्दिर के नवनिर्मित कार्यालय (मनु भवन) का उद्घाटन श्रीमान् अर्जुनसिंह जी देवड़ा साहब, (कैबिनेट मंत्री) ने किया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता प्रो० सत्यदेव वर्मा ने की। इस अवसर पर श्री शंकर सिंह राजपुराहित (विधायक आहोर) तथा श्री जोगेश्वर गर्ग (विधायक जालोर) भी उपस्थित थे। ❑

आर्यसमाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर (उ०प्र०) में

वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी सम्पन्न

आर्यसमाज खेड़ा अफगान जनपद सहारनपुर में "वैदिक ज्ञानवर्धिनी प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी प्राचीन भारत की गौरवमयी महान् संस्कति का ज्ञान प्राप्त कर भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का मार्ग प्रशस्त कर सके। इस प्रतियोगिता में दलहेड़ी, रनियाला, दयालपुर, भांकला, नकुड़, अम्बैहटा, झबीरन आदि के १३० बच्चों ने भाग लिया।

इस अवसर पर श्री धर्मसिंह सैनी, बेसिक शिक्षा मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार ने कहा कि आर्य समाज खेड़ा अफगान ने वैदिक सिद्धान्त ज्ञानवर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन कर समाज में जो जागति लाने का प्रयास किया है वह अनुकरणीय है। यदि सभी आर्य समाजें अपनी जिम्मेदारी निभाएं । इस प्रकार आयोजन करते रहे तो वही प्राचीन काल का वेदों का युग लौट सकता है। हमारा समाज एक सभ्य समाज बन सकता है।

सभी १३० बच्चों को दयानन्द जीवन दर्पण, महर्षि दयानन्द का कैलेण्डर एवं देश रक्षा के लिए गौ रक्षा पुस्तक बांटी गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जसक्त सिंह सैनी स्वतंत्रता सेनानी रामपुर ने किया।

— श्री आदित्य प्रकाश, प्रधान

ऋषि बोधोत्सव पर भाषण प्रतियोगिता

दिनांक : ६ मार्च, ०८, समयः प्रातः ११.०० बजे
स्थान : रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२
विषय : "राष्ट्र जागरण में महर्षि दयानन्द का योगदान"

प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक विद्यालय/छात्र अपने नाम ५ मार्च, ०८ तक आर्य युवक परिषद् दिल्ली के कार्यालय एच-६४, अशोक विहार, फेज-१, दिल्ली-५२ के पते पर भेजें। विजेता प्रतियोगियों को पारितोषिक एवं स्मति -चिह्न प्रदान किए जाएंगे। प्रत्येक संस्था/विद्यालय से केवल एक बच्चा ही भाग ले सकता है। भाषण प्रतियोगिता की अध्यक्षता महाशय रामविलास खुराना करेंगे।

— ओम प्रकाश, मन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**